ये समय लौटकर नहीं आयेगा

ब्र.कु.सूर्य..

जिसने हमारे सभी पापों को भुलाकर व क्षमा-दान देकर हमें स्वीकार किया, जिसने रात को भी दिन समान, रूहों की अथक भाव से मनोकामनाएं पूर्ण की, जिसने अपने सच्चे प्यार का प्रत्यक्ष प्रमाण देकर हमारा अलौकिक श्रृंगार किया, उस पारलौकिक परमपिता परमात्मा शिव और अलौकिक माँ ब्रह्मा के नि:स्वार्थ प्यार का फल हम क्या देंगे? क्या आशा है उसके दिल में? हमारी ममता की मूर्त्ति माँ (ब्रह्मा बाबा) और प्यार के सागर बाप (शिवबाबा) हमें सर्वश्रेष्ठ 'बाप-समान' स्थिति में देखना चाहते हैं। यदि हमारा भी उनसे सच्चे दिल का स्नेह है, तो हम उनके संकल्पों को पूर्ण करने की दिल में ठान लें। जब भी हमें हमारी अलौकिक माँ की याद आवे तो हम उसकी इस महान् अभिलाषा को स्मरण करें और उनके समान बनकर ही अपने दिल के सच्चे स्नेह का सबूत दें।

उन्होंने अपने महावाक्यों में हमें चुनौती भरे शब्दों में बाप समान बनने की प्रेरणा दी है। नि:संदेह, यह अनमोल समय पुन: लौटकर नहीं आयेगा। इस समय का अलबेलापन जन्म-जन्म के लिए पश्चाताप् का कारण होगा। इस समय की सुस्ती जन्म-जन्म की तकदीर की रेखा को टेढ़ा कर देगी। इस समय की गहन निंद्रा, अज्ञान की घोर निंद्रा ही मानी जायेगी। अत: विवेकशील आत्माओं का कर्त्तव्य है कि वे पूर्ण उमंग-उत्साह के साथ इस ईश्वरीय प्रेरणा को पूर्ण करने में तत्पर हों। जो ऐसा नहीं करेंगे, वे मानो द्वार पर आये भाग्य को अस्वीकार करने जैसा कर्त्तव्य करेंगे।

कुर्बानी-मैंपन की और कमजोरियों की - इतिहास में वीरों ने समय-समय पर गायन योग्य कुर्बानियां की है। अब इतिहास के अंतिम दौर में भगवान ने पुन: ललकारा है। इस आह्वान पर जो आत्माएं बाप समान बनने के लिए कुर्बानी करेंगी, वे ईश्वरीय सहयोग से अपने श्रेष्ठ लक्ष्य को पा लेंगी। तो हम सबको ईश्वरीय प्यार में कुर्बानी करने को तैयार रहना चाहिए। कुर्बानी हमें क्या करनी है? बाप समान बनने में सबसे बड़ी कुर्बानी है - मैंपन के अभिमान की। यह मैंपन या बुद्धि का अभिमान साधक को बार-बार स्वस्थिति वा श्रेष्ठ स्थिति से नीचे खींचता है। इसके अतिरिक्त हमें देखना होगा कि इस सर्वोच्च स्थिति को पाने के लिए कौनसी कमजोरी हमारे मार्ग में बाधक है? उसकी भी हमें कुर्बानी करनी होगी। मुख्य रूप से अपने चारों ओर फैलाए हुए विस्तार को समेटना आवश्यक होगा ताकि हमारा ये अनमोल समय व्यस्तता में ही न बीत जाए। इसके अतिरिक्त ईर्ष्या, द्वेष, मान-अपमान, घृणा आदि किचड़े की भी हमें कुर्बानी करनी होगी। इस प्रकार जो एक झटके से कुर्बानी करते हुए उमंग-उत्साह से इस दौड़ में आगे बढ़ेंगे, वे अवश्य ही समय से पूर्व मंजिल को पा लेंगे।

बाप समान बनने का अर्थ - बाप समान बनना अर्थात् भगवान जैसा सम्पूर्ण बनना। यह महान लक्ष्य स्वयं भगवान ने हमें दिया है और इस लक्ष्य की सिद्धि का सरलतम मार्ग है - 'ब्रह्मा बाबा को फॉलो करना'। ब्रह्मा बाबा क्या थे - इस बारे में बहुत कुछ हम जानते हैं। उनकी कुछ महानताओं का वर्णन यहां हम कर रहे हैं ताकि उन्हें अपनाकर बाप-समान बनना सहज हो।

वे महान राजऋषि थे - उनकी तपस्या प्रसिद्ध है। वे एकाग्रता के धनी थे। मन, बुद्धि पर सम्पूर्ण नियंत्रण रखने वाले वे अत्यन्त शक्तिशाली तपस्वी थे। सच कहें तो चलते-फिरते व कार्य करते भी वे निरंतर खुली आँखों से समाधिस्थ रहते थे। लगातार 33 वर्ष महान तपस्या में कभी उन्होंने ढील नहीं आने दी। अंतिम 3 वर्ष की तपस्या तो उनकी इतनी उच्चकोटि की थी कि जो भी उनके सामने आता, वह अशरीरी हो जाता जिसको भी वे छू देते, वह देहभान को भूल जाता और जिस पर भी उनकी दृष्टि पड़ जाती, वह पुराने संसार को ही भूल जाता। उनके चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश नजर आता था। उनका ललाट तेज से चमकता था। उन्होंने रात-दिन तपस्या की। इस तपस्या में उनकी निंद्रा भी योग-निंद्रा बन चुकी थी। वे कभी भी गाढ़ी निंद्रा में सोये नहीं देखे गये, मानो कि वे निरंतर ही जागती ज्योति बन गए थे। तब ही तो वे प्रजापिता ब्रह्मा कहलाये और पिछले 40 वर्षों से सूक्ष्मवतन में निरंतर भगवान तुल्य परम-आनन्द की स्थिति का रसपान कर रहे हैं, फरिश्ता बन विश्व सेवा कर रहे हैं। उन जैसा बनने के लिए हमें भी अब उनकी तरह वैसी ही गहन तपस्या करनी होगी।

इस समय का अलबेलापन जन्म-जन्म के लिए पश्चाताप् का कारण होगा। इस समय की सुस्ती जन्म-जन्म की तकदीर की रेखा को टेढ़ा कर देगी। इस समय की गहन निंद्रा, अज्ञान की घोर निंद्रा ही मानी जायेगी। अतः विवेकशील आत्माओं का कर्त्तव्य है कि वे पूर्ण उमंग-उत्साह के साथ इस ईश्वरीय प्रेरणा को पूर्ण करने में तत्पर हों। जो ऐसा नहीं करेंगे, वे मानो द्वार पर आये भाग्य को अस्वीकार करने जैसा कर्त्तव्य करेंगे।

उनकी इसी तपस्या का प्रभाव था कि जब भी कोई स्त्री या पुरुष उनसे मिलने आता, वह यह भूल जाता कि वे किसी पुरुष से मिल रहे हैं अथवा वह स्वयं भी पुरुष या स्त्री है। यह साकार बाबा की आत्मिक स्थिति व दृष्टि का प्रभाव था। वास्तव में देह में रहते हुए मानो देह-भान में नहीं रहते थे।

उनका जीवन वैराग्य से परिपूर्ण था - स्वयं मालिक होते हुए भी, सर्व प्राप्तियां होते हुए भी उन्होंने कभी भी वैराग्य की भावना को कम नहीं होने दिया। व्यक्तियों व वैभवों का आकर्षण उन्हें छू नहीं सका। सेवा के साधनों का उपयोग करते व कराते हुए, वे कभी भी उनके बंधन में नहीं आये। उनका वैराग्य आनन्द लिए हुए था। न तो वे स्वयं सूखे संन्यासी थे और न उनका वैराग्य ही सूखा था। वास्तव में यही वैराग्य की श्रेष्ठ स्थिति है।

परन्तु वैराग्य के साथ सेवा का उमंग व पढ़ाई का उमंग भी उनमें अद्वितीय था। कई बार ऐसा देखने में आता है कि कई वैरागी अच्छी बातों से भी वैराग्य कर बैठते हैं जो उनके जीवन के रस को छीन लेता है। परन्तु ब्रह्मा बाबा का वैराग्य आनन्द से परिपूर्ण था। जब भी कोई उनसे मिलने आता, उसे उनमें प्यार का सागर छलकता अनुभव होता। ऐसा नहीं था कि वैराग्य के कारण वे मनुष्यों से नहीं मिलते थे या वे जीवन में रस का अनुभव नहीं करते थे।

तो हम भी यदि उन जैसा बनना चाहते हैं, तो इसी विनाशी दुनिया, विनाशी पदार्थ, देह के आकर्षण, पदार्थों के आकर्षण, इच्छाओं की गुलामी, सांसारिक झुकाव आदि से वैराग्य धारण करें।

बाबा सागर की तरह गंभीर थे - गंभीरता महानता का प्रतीक है। ब्रह्मा बाबा राजा की तरह गंभीर थे। हम जानते हैं कि तृप्त व भरपूर व्यक्ति ही गंभीर रह सकता है। जो समाता है, वही बाप समान बनता है। जैसे परमपिता शिव हम आत्माओं के पापों को समा लेते हैं, जिसकी कल्पना - 'शिव ने जहर पिया' - कहकर की गई है। वैसे ही प्रजापिता ब्रह्मा भी सभी बच्चों के पापों को व भूलों को सहज भाव से समा लेते थे और उनकी महानता तो यह थी कि वे फिर उन आत्माओं को सच्चा प्यार देते थे। शुभ-भावनाओं का दान देते थे, न कि घृणा भाव रखते थे। इस समाने के महान गुण के कारण ही वे पाप-हर्त्ता रूप में प्रसद्धि हो गये।

तो बाप समान बनने के लिए हम भी गंभीर बनकर सब कुछ समाना सीखें। हर बात की यहां-वहां उल्टी (चर्चा) न करें। जैसे आजकल विज्ञान व्यर्थ वस्तुओं को कार्य उपयोगी बना देता है, वैसे ही हम भी दूसरों की हर बात को अच्छा रूप देकर ही ग्रहण करें। इससे हम महान बनेंगे, सागर समान ज्ञान के हीरे-मोतियों से भरपूर बनेंगे।

उनके संस्कार भगवान-तुल्य थे - जैसे भगवान सुख-दाता, दु:ख-हर्त्ता रूप में प्रख्यात है, वही संस्कार ब्रह्मा बाबा के थे। वे पूर्णतया सुख-स्वरूप थे, किसी के भी दु:खी दिल को क्षण-भर में सुख की शीतल लहरों में लहरा देते थे। उनके कल्याणकारी बोल रोतों को हंसाने वाले थे। दु:खी होने पर लोग भगवान की शरण में जाते हैं। जो भी उनके पास आता, उन्हें अपना सच्चा सहारा अनुभव करता था। वे डूबतों के सहारे थे।

उनका एक प्रसिद्ध गुण था - सबमें उमंग-उत्साह भरना। जो व्यक्ति स्वयं को अयोग्य, बेकार, निरुत्साहित समझता था, उसमें वे उमंगों के बाण फूंक देते थे। उनके पास लोग निराशा के पहाड़ उठाये आते और आशाओं के दीप जलाकर लौटते थे। इसी के साथ-साथ माँ के रूप में पालना देने के संस्कार भी उनमें खूब थे। दुनियावी दृष्टि में चाहे कोई गरीब हो या अमीर, सबके वे पिता थे, पालनहार थे। उनकी अलौकिक पालना की रीति लोगों के दिल जीत लेती थी। उन जैसा बनने के लिए यही रॉयल

शेष भाग पृष्ठ 10 पर

कानपुर (बर्रा)। केंद्रीय कोयला मंत्री प्रकाश जयसवाल एवं सांसद राजाराम पाल को 'ओम शांति मीडिया' भेंट करते हुए ब्र.कु.दुलारी एवं ब्र.कु.आरती।

बहादूरगढ़। योगगुरु बाबा रामदेव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.विनीता साथ में हैं ब्र.कु.अमृता, ब्र.कु.स्नू एवं ब्र.कु.रीना।

बदलापुर, वाराणसी। फिल्म अभिनेता एवं भोजपुरी गायक मनोज तिवारी को आध्यात्मिक संदेश देते हुए ब्र.कु.आरती एवं साथ में हैं ब्र.कु.रूही तथा अन्य।

सयन, मुम्बई। 'पर्सनालिटी डेवलपमेंट कैंप' में बच्चों को प्रमाणपत्र भेंटकर सम्मानित करते हुए क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु.संतोष।

लुम्बिनी, नेपाल। भवन शिलान्यास समारोह में उपस्थित हैं भू-संरक्षण मंत्री मो.वकील, ब्र.कु.परिणीता, ब्र.कु.शांति तथा अन्य।

करीमगंज। 'मेडिटेशन फॉर एक्सपिरियंसींग पीस' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए रामकृष्ण मिशन के स्वामी भक्ति परवानंद जी, गवर्मेंट कॉलेज के प्रिंसीपल शंतनु दत्ता, एस.पी.प्रदीप पुजारी, त्रिपुरा की ब्र.कु.कविता एवं ब्र.कु.चंपा।